NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX- A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No: 2581 - 4230
VOLUME 8, ISSUE 6, June-2022

TANIMA PRIYA
RESEARCH SCHOLAR
DEPTT. OF HISTORY
RADHA GOVIND UNIVERSITY, RAMGARH, JHARKHAND

SUPERVISOR
DR. AKHILESH RAJAK
RADHA GOVIND UNIVERSITY, RAMGARH, JHARKHAND

प्रागैतिहासिक काल में मानव का राजनैतिक इतिहास

सार

प्रागैतिहासिक काल में मानव के राजनैतिक इतिहास की कोई खास जानकारी हमें प्राप्त नहीं होती परन्तु गुफा, चित्रों तथा प्राप्त अवशेषों के आधार पर हम उस समय के राजनैतिक जीवन के बारे में थोड़ा सा अनुमान लगा सकते है । महादेव पर्वत के चारों ओर अवस्थित डोरोकीदीप, महादेव बाजार, सोनभद्रा, चम्बूदीप, निम्बूभोज, मोरोदेव, बनियाबेरी, तामिया झालाई आदि विभिन्न स्थानों पर चित्रित गुफाएं हैं । इन गुफाओं से प्राप्त एक दृश्य में कुछ धनुषधारी तथा अश्वारोही दो दलों में विभक्त होकर पारस्परिक युद्ध करते हुए चित्रित है ।[1]

सागर क्षेत्र में आबचन्द के समीप नरयावली तथा हीरापुर की चित्रांकित शिलाश्रयों में अश्वारोहीयों के अनेक चित्र प्राप्त हुए हैं।[2] लिखनिया की गुफा में आरोही क्रम में सशस्त्र मानव आकृति तथा युद्ध

[1] 'गैरोला' वाचस्पति : भारतीय संस्कृति और कला, पृ. 84
[2] गुप्त जगदीश : प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, पृ. 184, 338

दृश्य भी अंकित है ।[3] उत्तर प्रदेश स्थित बाँबा क्षेत्र के मालवा की गुफाओं में एक ऐसी गाड़ी या रथ का चित्र है, जिसमें कोई सम्भ्रान्तक व्यक्ति रथ पर आरुढ़ है । रथ के पृष्ट भाग में एक छत्रधारी एवं दोनों पार्श्वों में धनुष–बाण तथा दण्ड धारण किए हुए दो अंग–रक्षक भी अंकित है ।[4] उपकरण – प्रौगेतिहासिक काल के विभिन्न पुरास्थल – बेलन तथा सोन घाटी (उ०प्र०), सिंह भूमि (बिहार) बाघोर (म०प्र०) इनाम गाँव, रेणिगुण्टा, कर्नूल गुफाएँ (आ०प्र०), बुढ़ा पुण्कर, बागोर राजस्थान ।

ख. सैन्धवकालीन राजनैतिक दशा

पर्याप्त साधनों के अभाव में सिंधुवासियों की राजनीतिक स्थिति के विषय में कोई विशेष जानकारी प्राप्त नहीं होती फिर भी प्राप्त अवशेषों तथा प्रमाणों के आधार पर राजनैतिक संगठन का पता चलता है ।[5] उत्खन्नों में प्राप्त अवशेषों से तत्कालीन समुन्नत व्यवस्थित नगर निर्माण के ऐसे उदाहरण विरले ही मिलते हैं। जैसे – "एक दूसरे को काटते, एक–दूसरे के सामान्तर चले गऐ मार्गों, उन पर कतार से खड़े भवनों, अट्टालिकाओं के प्रसार, सार्वजनिक जलाशय सभी इस निष्कर्ष को प्रमाणित करते हैं कि मोहनजोदड़ो और हड़प्पा नगरों की सभ्यता जनपद सभ्यता से भिन्न थी ।[6] सैन्धव सभ्यता के उत्खनन में परिखा, प्रब्र, वप्र, द्वार, उट्टालक, महापथ, प्रासाद, कोष्ठागार, सभाभवन, वीथी, जलाशय आदि वास्तु के अनेक अंग प्राप्त हुए हैं जिनसे पता चलता है वहाँ राजनैतिक

---

[3] वही, पृ. 338

[4] 'गैरोला' वाचस्पति : भारतीय संस्कृति और कला, पृ. 85

[5] प्राचीन भारत : प्रतियोगिता दर्पण, पृ. 26

[6] शर्मा श्याम : प्राचीन भारतीय कला, वास्तुकला एवं मूर्तिकला, पृ. 26

संगठन अवश्य रहा होगा ।[7] 1946 के उपरान्त मोहनजोदड़ो और हडप्पा में किए गए कुछ अन्वेषणों से इस तथ्य को बल मिला है कि सिन्धु क्षेत्र के प्रत्येक नगर में दुर्ग रहा होगा और इनका प्रयोग राजकीय कार्यों के लिए किया जाता रहा होगा । उत्खनन से प्राप्त एक ही प्रकार के बाँट, माप–तौल के अन्य साधन, ईंटों के आकार, नगर निर्माण की एक–सी योजना, दुर्ग का निर्माण आदि इस प्रकार की सूचना प्रदान करते हैं कि सिंधु क्षेत्र में एक अत्यन्त ही व्यवस्थित शासन व्यवस्था रही होगी ।[8] सब स्थानों पर प्राप्त अवशेषों में एकरूपता है । इससे विदित होता है कि इस युग में यह साम्राज्य एक शासन के अन्तर्गत रहा होगा मोहनजोदड़ो और हड़प्पा दो प्रमुख नगर राजधानियों के रूप में रहे होंगे ।

अस्त्र शस्त्र

अधिकांश उपकरण ताम्र के बनाए गए थे । ताँबे और कांसे के बने विविध आयुध – परशु, तलवार, कटार, बरछी, धनुष–बाण, भाला, छूरी और चाकू मिले हैं ।[9]

ग. वैदिककालीन राजनैतिक इतिहास

वैदिक काल के अवशेष हमें बहुत ही नाममात्र के प्राप्त हुए है इसलिए वैदिक कालीन साहित्य में वर्णित कला के माध्यम से उस समय की राजनैतिक दशा का थोड़ा–बहुत वर्णन हम कर सकते हैं ।

1. **जन अथवा राष्ट्र** – आर्य कई जनों में विभक्त थे । अनेक ग्रामों का समूह मिलकर जन या जनपद कहलाता था । अनु, यदु, द्रुह्य, पुरु,

---

[7] अग्रवाल वासुदेव शरण : भारतीय कला, पृ. 18

[8] प्राचीन भारत : प्रतियोगिता दर्पण, पृ. 26

[9] कुमार कृष्ण : प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास, पृ.

तुर्वस आदि पाँच जनों को प×चजन कहा गया है।[10] वैदिक इन्डेक्स में इनकी स्थिति निम्न प्रकार से कही गई है ।

क. उत्तर–पश्चिम क्षेत्र – कम्बोज, गान्धार, अनिल, पक्य, भलान विषाणिन ।

ख. सिन्धु तथा वितस्ता नदियों का क्षेत्र – अर्जिकीय, शिव, केकय, वृचीवन्त ।[11]

ग. वितस्ता नदी के पूर्ववर्ती पार्वत्य क्षेत्र – महावृष, उत्तरकुरु, उत्तरमद्र ।

घ. शतुद्रि नदी का पूर्व क्षेत्र – भरत, त्रित्सु, पुरु, पारावत, सृ×जय ।

च. यमुना नदी का क्षेत्र – उशीनर, वश, साल्व, क्रिवि ।

इन जनों के अतिरिक्त मत्स्य, मु×जवन्त, पक्षु, यदु, सोमक, शिष्ठ शिम्यु, वैकर्ण, वरशिख, पृथु आदि जनों का उल्लेख वैदिक साहित्य में मिलता है ।[12] जन के अधिपति को जनपति या राजा कहा जाता था । ऋग्वेद में भरत जन के राजा सुदास का वर्णन मिलता है ।[13]

2. **राजभवन या राजप्रसाद** – ऋग्वेद में घर के लिए कई शब्द प्रयुक्त हुए हैं जैसे दम, गृह, पस्त्या, सदन, दुरोग, हम्य, अस्त, शरण आदि । उनके तीन भाग होते थे पहला भाग गृह द्वार दुसरा भाग आस्थानमण्डप यह राजप्रसाद का वह भाग था जिसमें दरबार और अतिथि सत्कार भी किया जाता था । घर का तीसरा भाग पत्नीसदन

---

10 विद्यालंकार सत्यकेतु : प्राचीन भारत की शासन संस्थायें तथा राजनीतिक विचार, पृ. 34
11 कुमार कृष्ण : प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास, पृ. 597

12 वही, पृ. 598
13 श्रीवास्तव के.सी. : प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, पृ. 66

अर्थात् अन्तःपुर कहते थे । वैदिक युग में घर का चौथा भाग अग्निशाला थी कालान्तर में राजप्रासादों में यही देवगृह कहा गया है । ऐसे प्रासाद का उल्लेख मिलता है जिसमें सहस्रद्वार होते थे ।[14] एक स्थान पर राजप्रासाद को सहस्र स्तम्भों वाला सभा भवन कहा गया है।[15] अथर्ववेद के अनुसार प्रजापति के बड़े महल का निर्माण दारुकर्म से हुआ ।[16]

3. **दुर्ग विधान** – वैदिक सभ्यता यद्यपि ग्रामप्रधान कही जाती है तथापि उस समय नगरों की रचना के प्रमाण मिलते हैं । ऋग्वेद में पुरो का वर्णन है । शम्बर के 100 दुर्गों का इन्द्र ने भेदन किया था ।[17]

4. **सभा और समिति** – वैदिक साहित्य में सभा और समिति नामक संस्थाओं का उल्लेख आता है । राजा के पद का निर्वाचन और शासन–व्यवस्था के संचालन में इन दोनों का बहुत महत्व था ।[18] सभा छोटी होती थी, समिति में समस्त जनता या विश का अधिवेशन किया जाता था जिसमें कई सहस्र जनसंख्या एकत्र होती थी उसी के लिए सहस्र स्थूण सदन का निर्माण सम्भवतः किया जाता था ।[19]

5. **रत्निसंस्था** – अथर्ववेद में राजकीय अधिकारियों को रत्नि नाम दिया गया । 'ऋग्वेद' में पुरोहित, सेनानी और ग्रामीणी के अतिरिक्त रत्नियों की संख्या में सूत, संग्रहीता, अक्षावाप (आय–व्यय का हिसाब

---

[14] अग्रवाल वासुदेव शरण : भारतीय कला, पृ. 52
[15] श्रीवास्तव के.सी. : पूर्व उद्धत, पृ. 67
[16] वही - 14
[17] कुमार कृष्ण : प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास, पृ. 511
[18] वही, पृ. 598
[19] अग्रवाल वासुदेव शरण : भारतीय कला, पृ. 51

रखने वाला) तक्षा, रथकार, क्षता, दौवारिक, भागदुध, रानी आदि रत्नियों का प्रादुर्भाव हुआ ।[20]

6. **युद्ध विधान** – ऋग्वेद में दस जन राजाओं के युद्ध का वर्णन मिलता है जो भारत जन के राजा सुदास के विरूद्ध लड़ा गया। विश्वामित्र ने सुदास के विरूद्ध एक षड्यन्त्र रचा जिसमें दस जन सम्मिलित थे । उनमें पाँच जन अनार्य थे उनके नाम थे अलीन, पक्थ, भलानस, शिव और विषाणिन तथा पाँच आर्य जन अनु, द्रुह्यु, तुर्वष, यदु और पुरु आदि थे तथा पहले वाले अनार्य जन थे । इन्द्र ने राजा सुदास की सहायता की और उसने दस जनों को रावी नदी के किनारे पराजित किया।[21] युद्ध में घोड़ों तथा रथों का प्रयोग होता था । वैदिक साहित्य में कई देवताओं के रथों का वर्णन भी मिलता है ।[22] ऋग्वेद में आकाश तथा पृथ्वी पर चलने वाले ऋभुजो की तीन पहिये के रथ तथा पक्षिचालित अश्विनीकुमारों के रथ का वर्णन है।[23]

7. **वैदिक आयुध** – वैदिक युग में प्रमुख आयुध इस प्रकार थे– धनुष–बाण, ऋष्टि, अंकुश, शतध्नी, परशु, कृपाण, बज्र आदि । कवच और शिरस्त्राण का प्रयोग आत्मरक्षा के लिए किया जाता था ।[24]

घ. महाकाव्ययुगीन एवं महाजनपदयुगीन राजनैतिक इतिहास

1. **नगर–रचना** – 'रामायण', 'महाभारत' तथा उत्तरवर्ती काव्यों में योजनाबद्ध नगर–विन्यास के वर्णन हैं । महाकाव्य काल तक

---

[20] श्रीवास्तव के.सी. : पूर्व उद्धत, पृ. 599
[21] महाजन वी.डी. : प्राचीन भारत का इतिहास, पृ. 102
[22] अग्रवाल वासुदेव शरण : भारतीय कला, पृ. 50
[23] निगम श्याम सुन्दर : वेदकालीन प्रौद्योगिकी : ओम प्रकाश पाण्डे, पृ. 15
[24] कुमार कृष्ण : प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास, पृ. 711

आते–आते आर्यों का प्रसार पूर्व की ओर अंग तक हो गया।[25] ईसा पूर्व छटी शताब्दी तक आते–आते जनपद, महाजनपदों के रूप में विकसित हो गए । जैन ग्रन्थ 'भगवतीसूत्र' तथा बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तरनिकाय से ज्ञात होता है कि महात्मा बुद्ध के उदय के कुछ समय पूर्व समस्त उत्तरी भारत 16 बड़े राज्यों में विभक्त था इन्हें 'सोलह महाजनपद' कहा गया है इनके नाम इस प्रकार मिलते हैं – 1. काशी 2. कोशल 3. अंग 4. मगध 5. वज्जि 6. मल्ल 7. चेदी 8. वत्स 9. कुरु 10. पा×चाल 11. मत्स्य 12. शूरसेन 13. अस्मक 14. भवन्ति 15. गन्धार 16. कम्बोज ।[26]

नगरों का विन्यास दुर्गो के रूप में होता था नगर महापथों, राजपथों और विथियों से विभक्त थे । नगरों के चारों और प्राकार बनवाकर उसके चारों ओर परिखा बनवाई जाती थी। प्राकार और परिखा की सुरक्षा का समुचित प्रबन्ध होता था ।

2. **राजप्रासाद** – विविध प्रकार के प्रासादों का वर्णन प्राचीन साहित्य में है । राजप्रासाद कई मंजिले ऊँचे राजमार्ग के मध्य बनाए जाते थे ।[27] 'मानसार' के अनुसार हर्म्य सात मंजिले होते थे । राजाओं के विशाल वैभवशाली अन्तःपुर होते थे । राजसभा का आयोजन करने के लिए आस्थान मण्डप होते थे।[28] राजाओं की राजसभा में बैठने के लिए सिंहासन होता था जो बहुमुल्य धातुओं से जड़ित होता था । इन्द्रप्रस्थ में मपदानव द्वारा बनाए गए राजप्रसाद और वारणावत में

---

25 श्रीवास्तव के.सी. : प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति, पृ. 90

26 श्रीवास्तव के.सी. : प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति, पृ. 90,94

27 कुमार कृष्ण : प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास, पृ. 513

28 कुमार कृष्ण : प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास, पृ. 513–14

पुरोचन द्वारा बनाया गया लाक्षाग्रह वास्तुकला के अनुपम उदाहरण थे । विद्वानों ने पाटलीपुत्र की खुदाई में मिले चन्द्रगुप्त के सभा–भवन की तुलना महाराज युधिष्ठिर के सभा–भवन से की है । चित्र–सज्जित रानी कैकेई के राजप्रसाद का वर्णन मिलता है।[29] महासुदस्सन सुत्त और दीघनिकाय में चक्रवर्ती महासुदस्सन के 84000 स्तम्भों वाले राजप्रसाद का उल्लेख है ।[30] नायाधम्मकहा में किसी रानी के शयनकक्ष का वर्णन है ।[31]

3. **दुर्ग निर्माण** – बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा के लिए सर्वोतम साधन दुर्ग ही थे । राज्य के मध्य में, राजधानी में, अन्य नगरों तथा ग्रामों में, राज्य की सीमाओं पर, जंगलों में, मरुस्थलों में जलीय स्थानों में शत्रुओं के आक्रमणों को रोकने के लिए दुर्गो का निर्माण किया जाता था । दुर्ग का अभिप्राय था – धनुदुर्ग, महीदुर्ग, जलदुर्ग, वार्क्षदुर्ग, नृदुर्ग और गिरिदुर्ग। मज्झिम–निकाय से पता चलता है कि प्रद्योत्त के आक्रमण से रक्षा के लिए अज्ञात शत्रु ने अपनी राजधानी राजगृह का दुर्गीकरण करवाया ।[32]

4. **युद्ध विधान** – 'रामायण तथा महाभारत' दोनों महान काव्यों में भयानक युद्धों की स्थितियाँ चित्रित हैं । राम ने अंगद को शान्ति राजदुत बनाकर रावण के पास भेजा ताकि युद्ध की स्थिति न आने दें । महाभारत–युद्ध से पूर्व कृष्ण पाण्डव–पक्ष की ओर से शान्ति दूत

---

[29] 'गैरोला' वाचस्पति : भारतीय संस्कृति एवं कला, पृ. 197
30 अग्रवाल वासुदेव : भारतीय कला, पृ. 66

[31] अग्रवाल वासुदेव शरण : भारतीय कला, पृ. 66–70
[32] श्रीवास्तव के.सी. : प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, पृ. 116

बनकर गये थे ।[33] महाभारत में सेना के आठ अंग कहे गये है – रथ, गज, अश्व, पदाति, नौसेना, श्रमिक, नौका और गुप्तचर ।[34] रामायण में राम और महाभारत में भीष्म, कर्ण, द्रोण भीम, अर्जुन आदि वीरों की वीरता, युद्ध–कौशल, और संगठन शक्ति का परिचय मिलता है । द्वन्द्व–युद्ध तथा मल्ल युद्ध का वर्णन भी मिलता है ।[35] महाभारत में व्यूह–रचनाओं का वर्णन है ।[36] अजातशत्रु ने लिच्छवियों को युद्ध में पराजित करने के लिए प्रथम बार रथमूसल तथा महाशिलाकण्टक जैसे हथियारों का प्रयोग किया जिससे अजातशत्रु युद्ध में विजयी हुआ ।[37]

5- **युद्ध–वाद्य** – युद्धों के समय विविध वाद्यों के बजाये जाने के वर्णन प्राचीन साहित्य में प्राप्त होते हैं । इनमें प्रमुख वाद्य इस प्रकार हैं – दुन्दुभि, कांस्यताल, डिण्डिम, पटह, तूर्प, भेरी, पटह और शंख ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

झा, डी.एन. कृष्णमोहन श्री माली : **प्राचीन भारत का इतिहास बुद्धिज्म इन क्लासीकल ऐज**, दिल्ली, 1985

पाण्डेय, वी.सी. : **प्राचीन भारत का इतिहास**, दिल्ली, 2014

---

33 कुमार कृष्ण : प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास, पृ. 692

34 वही, पृ. 694

35 कुमार कृष्ण : प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास, पृ. 700, 766

36 वही. पृ. 766

37 श्रीवास्तव के.सी. : प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, पृ. 116

पाठक, विशुद्धानन्द : **पांचवीं–सातवीं शताब्दी का भारत**

बील, सैमुअल : **बुद्धिस्ट रिकार्ड ऑफ द वेस्ट्न वर्ल्ड**, दिल्ली, 1995

.... : **दी लाइफ ऑफ ह्वेनसांग**, दिल्ली, 1973

.... : **दी ट्रैवल्स ऑफ फाह्यान एंड सुग युन**, दिल्ली, 1998

मुखर्जी, पी.के. : **इंडियन लिट्रेचर इन चाईना एण्ड फार ईस्ट,** कलकत्ता, 2012

मार्शल, नागौरी, एस.एल. : **प्रिंसीपल्स ऑफ इक्नोमिक्स,** प्राचीन भारत

मजूमदार, आर.सी. : **दी क्लासीकल ऐज**, भारतीय विद्या भवन, बम्बई, 2009

लेग्गे, जेम्स : **दी ट्रैवल्स ऑफ फाह्यान,** दिल्ली, 1971

वाटर्स, थामस : **ह्वेनसांग ट्रैवल्स इन इंडिया**, दिल्ली, 2011

सरकार, डी.सी. : **स्लैक्ट इन्सक्रिप्शन**, खण्ड 2, दिल्ली, 1983

शर्मा, रीता : **भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास**,दिल्ली, 2013

शर्मा, ठाकुर प्रसाद : **ह्वेनसांग की भारत यात्रा**, दिल्ली, 2015

त्काकुसु : **इत्सिंग, ऐ रिकार्ड ऑफ दी बुद्धिस्टिक रिलीजन ऐज प्रैक्टि्स्ड्स इन इंडिया एण्ड दी मलाया आर्कियोलॉजी,** ऑक्सफोर्ड, 1896